P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-5* (Part-1) August- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मध्यकालीन मेवाड़ का दरबारी जीवन

अंजना बारठ
सहायक आचार्य,
इतिहास विभाग,
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान

सारांश

राजस्थान के शिरोमणी राज्य मेवाड़ के दरबारी जीवन के विभिन्न पक्षों व परम्पराओं ने मध्यकाल के सांस्कृतिक जगत को समृद्ध व गौरवशाली बनाया है। मेवाड़ के दरबार ने उन प्रथाओं, परम्पराओं व विशिष्टताओं को पनाह दी है, जिन्होंने भारत की संस्कृति को नये आयाम प्रदान किये है। उच्च आदर्शों व मूल्यों पर आधारित इन परम्पराओं के सुदीर्घ इतिहास का अध्ययन साँस्कृतिक व सामाजिक सरोकारों से परिपूर्ण है। प्रस्तुत शोध पत्र में मेवाड़ के दरबारी जीवन की विशिष्टताओं को प्रस्तुत किया गया है, जिनके अध्ययन से ही मेवाड़ के गौरवशाली अतीत व इतिहास की झाँकी सम्पूर्ण हो पायेगी। परम्पराओं प्रथाओं व इनके निर्वाह के प्रति निष्ठा ने ही मेवाड़ को गौरवशाली अतीत के स्वर्णिम पृष्ठ प्रदान किये है।

मुख्य शब्द : मेवाड़, दरबारी जीवन, दरीखाना, जागीरदारी व्यवस्था।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति की विकास यात्रा में राजस्थान का उल्लेखनीय योगदान सुस्थापित है, मध्यकालीन राजस्थान में आमेर, मारवाड़ एवं मेवाड़ मुख्य राजपूत राज्य थे, मेवाड़ में गुहिल वंश के राज्य का आरम्भ 568 ई. के आस–पास हुआ था, मेवाड़ में अनेक ठिकाने थे, तथा ठिकानेदार राज्य के प्रमुख महाराणा के अधीन कार्य करते थे, मेवाड़ का गुहिल राजवंश संभवतः 1350 से अधिक वर्षो तक एक ही भू–क्षेत्र पर अविच्छिन्न रूप से राज्य करने वाला संसार का एकमात्र राजवंश है, भारत के सांस्कृतिक उत्थान में मेवाड़ की अनुपम भूमिका रही है, मेवाड़ के इतिहास का सर्वाधिक गौरवशाली काल मध्ययुग था, मेवाड़ का इतिहास स्वतंत्रता के प्रति उत्कृष्ट लगाव का इतिहास है, मुगल साम्राज्य के विरूद्व मेवाड़ ने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिये एक लम्बा संघर्ष किया और अपने कुल के गौरव को बढ़ाया, इसलिये उदयपुर के महाराणा ''हिन्दुआ सूरज'' कहलाते है।

अध्ययन का उद्देश्य

उक्त शोध पत्र में मेवाड़ के राजवंश के दरबारी जीवन से सम्बन्धित समस्त कार्यव्यवहार, शिष्टाचार, परम्परा व प्रथाओं के माध्यम से मध्ययुगीन मेवाड़ सस्कृति के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया गया है। दरबारी जीवन के माध्यम से मेवाड़ के साँस्कृतिक जगत के विभिन्न अंगों को व्यक्त किया गया है। मेवाड़ के दरबार में नैतिक मूल्यों व परम्पराओं के अनुरक्षण का सुदीर्घ इतिहास रहा है, जिसनें भारत के साँस्कृतिक फलक को और भी कलापूर्ण व सतरंगी बनाया है, इस शोधपत्र में मेवाड़ में प्रचलित व सर्वमान्य दरबारी जीवन की विशिष्टताओं को सहेजा गया है।

इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने मेवाड़ के राजवंश का प्रारम्भ अयोध्या के राजा रामचंद्र के ज्येष्ठ पुत्र कुश के वंश से माना है, इसी वंश में वि. स. 625 (568 ई.) के आस–पास मेवाड़ में गुहिल नाम का प्रतापी राजा हुआ, जिसके नाम से उसका वंश ''गुहिल वंश'' कहलाया, इसी वंश की एक शाखा सीसोदा गांव में रही, जिससे यह राजवंश सीसोदिया कहलाया।

मेवाड़ का राजवंश गौरव सूर्यवंशियों में भी सर्वोपरि माना जाता है, मेवाड़ के महाराणा के राजचिन्ह में अंकित :–

'' जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहिं राखै करतार ''

उनके शिरोमणि आदर्श को व्यक्त करता है, मेवाड़ के प्राचीनतम राजवंश की समृद्ध ऐतिहासिक परम्परा उनका अद्भुत शौर्य व सांस्कृतिक योगदान भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण धरोंहरों को समेटे हुए है, मेवाड़ की परम्पराओं के संवाहक मेवाड़ के महाराणाओं का दरबारी जीवन संस्कृति के विभिन्न पक्षों को व्यक्त करता है, दरबारी जीवन के विभिन्न आयामों यथा राजनैतिक तंत्र, महाराणाओं के इष्टदेव, उनकी पूजा–पद्धति, मेवाड़ की कुलदेवी

बाणमाता व इनकी प्रतिष्ठा, महलों के देवस्थान व महाराणाओं के गुरू आदि का अत्यन्त महत्वपूर्ण सांस्कृतिक महत्व है, महाराणाओं का नैतिक जीवन व उच्च आदर्श, मूल्यों का संवर्द्धन आदि का मूल इन्हीं श्रद्धा के निमित्त माने गये परम्परा के तत्वों पर निर्भर करता है।

मेवाड़ के महाराणा के पद में दैवी अधिकार का सिद्धांत था, व समस्त शक्तियां उसमें निहित थी, किंतु मेवाड़ राज्य के अधिपति श्री एकलिंग जी थे, और महाराणा स्वयं को उनका दीवान मानकर शासन करते थे। मान्यता है कि बप्पा ने ही अपने आराध्य देव एकलिंग (महादेव) का मंदिर बनवाया। यह महादेव मेवाड़ राज्य के स्वामी माने जाते है। मेवाड़ के महाराणा ''दीवान'' कहलाते है। वे स्वयं को एकलिंग जी का दीवान मानकर शासन कार्य चलाते है[1]। मेवाड़ के महाराणा स्वयं को देवी प्रदत्त अधिकारों का निर्वाहक एवं सवांहक मानते थे, नियामक नहीं। महाराणा के द्वारा प्रसारित आदेश पत्रों, दानपत्रों, शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों पर एकलिंग प्रसादातु और दीवान आदेशानु का अंकन किया गया है, मेवाड़ में प्राचीन परम्पराओं का अनुपालन एवं विकास महत्वपूर्ण है, सामान्यतया सभी महत्वपूर्ण विषयों पर जागीरदारों से परामर्श लेकर ही कार्य किया जाता था।

मेवाड़ के महाराणा स्मृति ग्रन्थों के अनुरूप आचरण एवं व्यवहार करते थे, मेवाड़ के महाराणाओं का जीवन विभिन्न संस्कारों के पालन के साथ–साथ रस्मों एवं पारम्परिक पद्धति के अनुरूप होता था, मेवाड़ में महाराणा के राज्याभिषेक को गादी उच्छब के नाम से जाना जाता था, हेमाद्रि प्रायश्चित दान के पश्चात् दशाविधि स्नान की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती थी, इसके पश्चात् वस्त्राभूषण पहने जाते थे, एवं धार्मिक कार्यो का संचालन किया जाता था।

वस्त्र

लपेटो, डोडी, पायजामो, फेटो (सभी सफेद), माजो गुलाबी, पगड़ी अमरशाही।

आभूषण

नाद रूद्राक्ष, कंठलो रूद्राक्ष (मोती), पोंछा (मोती), लंगर (हेम), मोती चौकड़ो, बुगदो, ढ़ाल वींटी (हीरे की), धूरी डोर, ढ़ाल बुगदा।[2]

पट्टाभिषेक के बाद पहला दरीखाना होता था, इसमें प्रथम श्रेणी के सरदार व अन्य अपने पट्टे के अनुसार नछरावल करते थे।

राजपरिवार में बालक का जन्म होने पर संबन्धित समस्त संस्कारों का पालन किया जाता था, मेवाड़ के राजपरिवार में विवाह एक प्रमुख संस्कार माना गया विवाह का मौलिक स्वरूप पारस्कीय गृहसूत्र के गदाधर भाष्य पर आधारित है, सनातनी विवाह पद्धति के विवाहों में शास्त्रीय, लौकिक एवं पारिवारिक परम्पराओं का अनुपालन किया जाता था, इसका सामाजिक एवं सास्ंकृतिक स्वरूप महत्वपूर्ण था।

मेवाड़ के दरबार में राजपुरोहित का महत्वपूर्ण स्थान था, महाराणा हम्मीर के समय से पालीवाल ब्राह्मण राजपुरोहित का कार्य करते आ रहे थे, पुरोहित धार्मिक अनुष्ठान के अतिरिक्त युद्धों में भी भाग लेते थे।

पूर्व में पर्दा प्रथा मेवाड़ में नहीं थी, ऐसा विवरण मिलता है, रानियां सामाजिक, धार्मिक आयोजनों में सहभागिता देती थी, राज्याभिषेक के समय महाराणा के साथ राजगद्दी पर बैठती थी, महाराजा राजसिंह द्वितीय के समय से यह परिपाटी बंद हो गई।[3] मेवाड़ में रानियों के लिये अलग महल एवं व्यवस्था थी, इसे जनानी ड्यौढ़ी, रनिवास एवं रावला आदि नामों से जाना जाता था, यह स्थान सामाजिक एवं धार्मिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ।

रनिवास में पुरूष प्रवेश वर्जित था, व सुरक्षा व्यवस्था अत्यन्त कड़ी रहती थी, जनाना ड्यौढ़ी की सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व ड्यौढ़ी मेहता पर होता था, यह पद पुश्तैनी था, जनानी ड्यौढ़ी की सुरक्षा व्यवस्था के लिये अनेक प्रावधान किये गये थे।

रानियों को प्रतिमाह निजी खर्चे की बंधी हुई रकम मिलती थी, कई रानियों ने अपनी बचत से मंदिर देवालय व अनेक दान–पुण्य से सम्बन्धित कार्य किये, रानियों के दरबार ओसारे में लगते थे, तथा सभी उत्सव, त्यौहार, पर्व परम्परानुसार मनाये जाते थे।

मेवाड़ राज्य का दरबार मेवाड़ की मर्यादा एवं शान का प्रतीक है, दरबार में शासक एवं दरबारी एक सुनिश्चित व्यवस्था एवं शिष्टाचार के नियमों में बंधे रहते थे, मेवाड़ में दरबार के लिये दरीखाना शब्द का प्रयोग होता था, इनको 6 भागों में विभाजित किया जा सकता है।[4]

साधारण दरीखाना, पट्टाभिषेक का दरीखाना, त्यौहारिक दरीखाना, गमी का दरीखाना, तलवार बंदी का दरीखाना, आम दरीखाना, इन सभी में समय एवं परिस्थितिनुसार दरबारी पारम्परिक शिष्टाचार की परम्पराऐं सुनिश्चित होती थी, मेवाड़ में ठिकानें वर्गीकृत थे, महाराणा अमरसिंह प्रथम व द्वितीय के समय इन्हें पूर्ण रूप दिया गया इनकी 3 श्रेणियाँ है, सोलह, बत्तीस व गोल, बैठक की व्यवस्था के समय ठिकानेदारों द्वारा किया गया त्याग व बलिदान महत्वपूर्ण निर्णायक था, महाराणा की ओर से उमरावों व सरदारों को सम्मान देने के तरीके में ठिकाने के अनुसार अन्तर किया जाता था, कुछ सामान्य नियम इस प्रकार थे, लवाजमा, जुहार, तलवारबंदी, वार्तालाप, पानबीड़ा, सीख, खल्ला, उपहार, छड़ी, पौशाक, वर्जना, गोठ, सिरोपाव आदि दरबारी शिष्टाचार व नियमों की पालना करवाने के लिये ''दरीखाने का दरोगा'' होता था।

मेवाड़ में उमरावों एवं सरदारों में उनके पूर्वजों द्वारा की गयी सेवाओं के अनुपात में अधिकार एवं विशेषाधिकार थे, इसी परम्परागत व्यवस्था का पालन करवाना दरोगा का काम था, महाराणा सांगा के समय से ही इस पद पर वागेश्वर पुरोहित (सनाढ्य ब्राह्मण) के वंशजों का एकाधिपत्य रहा था, दरबारी नियमों में समय के साथ परिवर्तन भी हुए है, फिर भी परम्पराओं के मूल स्वरूप को कायम रखा गया।

मेवाड़ की रियासत में महाराणा की दरबार व्यवस्था में पान–बीड़े का महत्व अत्यन्त अनूठा है, इसमें महाराणा अपने श्रीमुख से बिना कुछ कहे पान–बीड़े के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त करते थे, इस परम्परा में

शिष्टाचार, अनुशासन, मैत्री एवं प्रतिष्ठा का अद्भुत मेल है, पान–बीड़ बनाने के लिये अलग विभाग तंबोलखाना था, जिसका मुख्य अधिकारी ''खवासजी'' होता था। बीड़े बनाने का कार्य तंबोली करते थे।[5]

मेवाड़ की जागीरदारी प्रथा अत्यन्त दृढ़ थी, साथ ही मेवाड़ में उमरावों के अधिकार एवं विशेषाधिकार राजपूतानें के अन्य राज्यों की तुलना में अधिक थे, वे खास अवसरों पर खासा रूक्का मिलने पर ही महाराणा की सवारी में शामिल होते थे, दरबार में उनका स्थान (बैठक) गद्दी के उत्तराधिकारी युवराज से ऊपर होता था, उमराव के दरबार में पहुंचने पर सभी खड़े होकर स्वागत करते थे, इस अवसर पर अपने पद एवं मर्यादा के अनुसार उनका सम्मान होता था। ऐसी मिसाल अन्यत्र दुर्लभ है।[6] मेवाड़ की जागीरदारी प्रथा उदार थी, उमरावों सरदारों में राज्य के प्रति निष्ठा व कर्तव्य की भावना समाहित थी, समय के साथ इन सम्बंधों में विवाद भी पैदा हुए किंतु मेवाड़ की परम्परागत व्यवस्था वैसी ही बनी रही, मेवाड़ की जागीरदारी प्रथा की एक प्रमुख विशेषता यह भी थी, कि मेवाड़ में बाहर से आए हुए क्षत्रिय परिवारों को भी जागीरें प्रदान की गई, मेवाड़ की शक्ति का स्त्रोत यही जागीरदारी प्रथा थी।

मेवाड़ की जागीरदारी व्यवस्था में दो मुख्य आधार स्तम्भ थे –

1. स्थानीय राजवंश से संबन्धित वर्ग–चूँड़ावत, सारंगदेवोत, राणावत एवं शक्तावत।
2. बाहर से आये काले पट्टे के उमराव–सरदार–राठौड़, झाला, पंवार, चौहान, सोलंकी आदि, महाराणा एवं जागीरदारों के परम्परागत सम्बंधों में तलवार बंधायी का दस्तूर सर्वाधिक महत्ववपूर्ण था, यह ठिकाने के उत्तराधिकारी की महाराणा द्वारा मान्यता प्रदान करने की रस्म थी, मेवाड़ में प्रत्येक ठिकानेदार के कुरब कायदे अलग–अलग थे, इनका आधार ठिकानेदारों के द्वारा मेवाड़ के प्रति किये गये बलिदान, स्वामिभक्ति व सेवाओं के अनुरूप था, कुरब कायदे सम्बंधी विशेषाधिकारों को राह मरजाद कहा जाता था, राह मरजाद की मुख्य विशेषताऐं थी, खास रूक्का, चाकरी, अभिवादन परम्परा, जुहार और मुजरा, बांह पसाव, रस्मी पोशाक, अगवानी, ताजीम, लवाजमा आदि, मेवाड़ की धरा का सांस्कृतिक वैभव भारतीय संस्कृति की एक अनुपम धरोहर है, मध्यकालीन दरबारी जीवन का इतिहास इसी संस्कृति का आईना है, मेवाड़ के शासकों जैसे कुंभा, सांगा व प्रताप की वीरता व देशप्रेम प्रत्येक भारतवासी के लिये गर्व का विषय रहा है, भारतीय संस्कृति में व्यक्त समस्त मानवीय एवं आध्यात्मिक पक्षों की अभिव्यक्ति मेवाड़ की संस्कृति में प्रतिबिम्बित होती है।

मेवाड़ के राजवंश का इतिहास अत्यन्त दीर्घकालीन रहा है, जिसमें सांस्कृतिक मूल्यों की भरमार है, मेवाड़ के राजवंश में दरबार के जीवन से सम्बन्धित समस्त कार्यव्यहार, शिष्टाचार, परम्परा ने निश्चय ही भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को समृद्ध व वैभवशाली बनाया है, मेवाड़ ने भारतीय इतिहास में जो स्वर्णिम पृष्ठ जोड़े है, निश्चय ही इन्हीं परम्पराओं, मर्यादाओं, शिष्टाचार व अलिखित मूल्यों की देन है, मेवाड़ की धरा पर शौर्य, त्याग, बलिदान, भक्ति व लोकरंग बिखरे पड़े है, परम्परायें, समसामयिक शिष्टाचार मात्र औपचारिक नहीं होता है, इन परम्पराओं, नियमों के परिपालन का उद्देश्य संस्कार निर्मित करना है, संस्कारों का निर्वहन चरित्र के निर्माण में महती भूमिका निभाता है, संस्कारों की इन्हीं सूक्ष्म धाराओं ने मेवाड़ में चरित्रिक उत्कर्ष के प्रतिमान स्थापित किये है।

निष्कर्ष

मध्ययुगीन मेवाड़ के दरबारी जीवन की प्रथाओं परम्पराओं व शिष्टाचार ने संस्कृति के व्यापक क्षेत्र में नये अवदान दिये है। दरबार की विशिष्टताओं में मेवाड़ के राजवंश के चारित्रिक उत्कर्ष व मूल्यों के प्रति निष्ठा की भावना व्यक्त होती है। मेवाड़ के महाराणा सदैव धर्म के प्रति दृढ़ रहे है, मातृभूमि के प्रति उनका उत्कट लगाव भी उनका शिरोमणी आदर्श है। दरबारी जीवन की तमाम विशिष्टताओं में भी उच्च आदर्शो का निर्वहन हुआ है। दरबारी जीवन के विभिन्न अंग, व्यवस्थाऐं व परम्पराऐं संस्कृति के विविध स्वरूप को अभिव्यक्त करती है। निश्चय ही मेवाड़ ने भारत की इस अमूल्य धरोहर को सिर्फ सहेजा ही नहीं है, वरन् उसे और भी शुभ्र व हितकारी स्वरूप प्रदान किया है। दरबारी व्यवस्था के नियामक महाराणा रहे है, लेकिन सामान्यजन की भागीदारी भी देखी जा सकती है। दरबार व सेवादार समेकित होकर ही अपनी भूमिका का निर्वाह करते थे। मेवाड़ में समुदाय विशेष की भूमिका भी दरबारी जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण रही। निश्चय ही वर्तमान भौतिकवादी संस्कृति जिसमें निरन्तर जीवन मूल्यों का क्षय दिखाई देता है, के लिये मेवाड़ के दरबारी जीवन की परम्पराऐं व मूल्य प्रेरणा के स्त्रोत सिद्व होगें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *टॉड कर्नल–एनल्स एंड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान लंदन, 1920*
2. *रावल राणाजी री बात–प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर।*
3. *वीर विनोद–श्यामलदास, मयंक प्रकाशक, जयपुर, 1986*
4. *उदयपुर राज्य का इतिहास औझा गौरीशंकर, हीराचंद वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1985*
5. *शर्मा धर्मपाल, मेवाड़ संस्कृति एवं परम्परा, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, 1999*
6. *महाराणा फतहसिंह हकीकत बहिडा।*
7. *व्यास प्रकाश–मेवाड़ राज्य का इतिहास।*
8. *वाल्टर्स सी. के. एफ.–बायोग्राफिकल स्केचेज ऑफ दी चीफ्स ऑफ मेवाड़।*
9. *मेवाड़ दरीखाने के रीतिरिवाज एवं संस्कार–डॉ. राजेन्द्र नाथ पुरोहित।*
10. *आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के कतिपय पहलू बनेड़ा दस्तावेज।*
11. *जे.सी. बुक–हिस्ट्री ऑफ मेवाड़।*
12. *मुहणोत नैणसी की ख्यात।*
13. *नीरज जयसिंह–राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी। जयपुर, 1989*

14. *शर्मा गोपीनाथ–राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास। राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1989*
15. *चूंडावत लक्ष्मीकुमारी व स्वर्णकार रमेशचंद राजस्थान के रीति–रिवाज, पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर, 2016*

पाद टिप्पणी

1. *गहलोत जगदीश सिंह, राजपूतानें का इतिहास भाग प्रथम, हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर, 1937 पृष्ठ–153*
2. *महाराणा फतहसिंह हकीकत बहिड़ा, भाग–1, पृष्ठ–31*
3. *औझा गौरीशंकर, हीराचंद, उदयपुर राज्य का इतिहास भाग–2, पृष्ठ–644 वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1985*
4. *पुरोहित राजेन्द्रनाथ, मेवाड़ का दरबारी जीवन शोध प्रबंध पृष्ठ–59*
5. *चित्तौड़ जिले में तम्बोलिया गांव दो हजार साल पहले तम्बोलिया ने बसाया था राजस्थान पत्रिका 25 मार्च, 1998*
6. *वाल्टर्स सी.के.एफ.–बायोग्राफिकल स्केचेज ऑफ दी चीफ्स ऑफ मेवाड़ (भूमिका)*